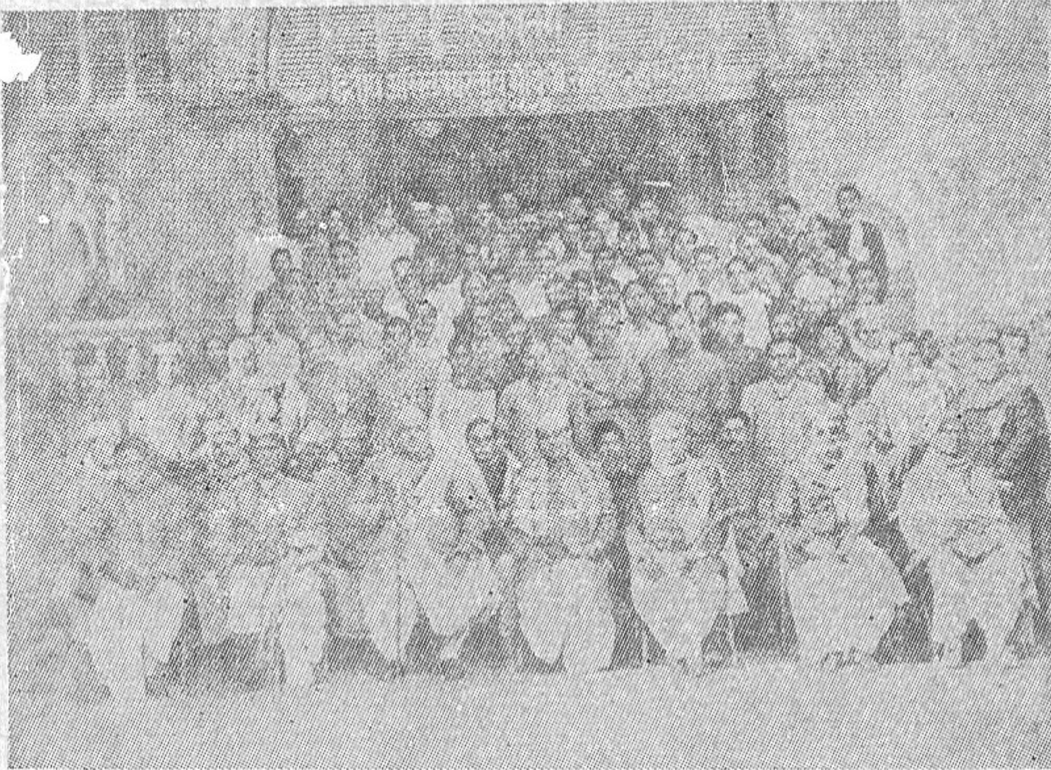
वैदेही

मैथिलीक सर्वोत्तम मासिक

प्रकाशनक ३९म वर्ष

२ रू० प्रति

वैदेही समिति
दरभंगा



वैदेही समिति द्वारा आयोजित

ा० भा० मैथिली साहित्य सम्मेलन [1963] मध्य बाबू सत्यनारायण सिंह [अध्यक्ष], पं० विनोदानन्द झा [मुख्य मंत्री] ओ महामहोपाध्यायड ा० उमेश मिश्र कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा [स्वागताध्यक्ष]

विहार सरकार द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत

एक प्रति : २.००
वार्षिक : २०.००
आजीवन : २५१.००
संरक्षण : ५००.००

वैदेही

संस्थापक प्रेरणा : इन्द्र कान्त मिश्र (कुमार)

प्रो० श्री कृष्ण कान्त मिश्र द्वारा कुमार प्रिंटिंग प्रेस, दरभंगा सँ सम्पादित मुद्रित एवं प्रकाशित।

अतिथि सम्पादक :
रमानन्द रेणु

मार्च-अप्रैल, १९८९

क्रम

प्राप्ति स्थान :
वैदेही समिति, दरभंगा
दूरभाष : २२३६

प्रियंवदा

(एकांकी)

□ नचिकेता

पात्र परिचय

प्रियंवदा : २५ वर्षक सुशिक्षित सुन्दर कन्या; परिधेय साड़ी; प्रथम कल्लोलमे हाथमे दू-एकटा पुस्तक, पत्र-पत्रिका; सुदृश्य पर्स; सुसज्जिता। प्रथम, द्वितीय आ तृतीय कल्लोलमे मुद्रित सिल्क अथवा सिंथेटिक साड़ी-ब्लाउज; चतुर्थ कल्लोलमे गृहिणी जकाँ पोशाक — ललका पाढ़िक श्वेत-शुभ्र साड़ी आ सादा ब्लाउज; अंतिम कल्लोलमे करिया साड़ी-ब्लाउज आ केश खुजल रहतनि। प्रथम कल्लोलमे सुदीर्घ केशराशि बान्हल आ वेणी-बद्ध रहतनि। दोसर कल्लोलमे गृहबधू जकाँ खोंपा बनौने रहतीह।

शर्व : ३०क आसपास आयु; ने बेसी दुब्बर-पातर, ने मोट; परिवेश— प्रथम आ तेसर कल्लोलमे शर्ट-पैंट आ द्वितीय कल्लोरमे कुर्ता-पायजामा।

मंचसज्जा

पूर्वाङ्कित : १ (i) घरिक फर्नीचरक अतिरिक्त एकटा ऐश-ट्रे, कैकटा पत्र-पत्रिका आ पुस्तक (टेबुल पर); कैकटा हैंगर (जे कि दरबज्जाक फ्रेम पर लागल कांटो पर लटकाओल जा सकैछ)— टेबुलक दराजमे राखल अछि।

प्रथम कल्लोल

[मंचक सन्मुख-भागमे एकटा बॉक्स-टाइप टूल राखल अछि, जाहि पर शर्व अपन ठेहुन पर माथ धयने बैसल अछि। शर्व पर स्पॉट लाईट 'क' पड़ैत अछि। स्पॉट 'ख', ग' आ 'घ' क लऽग अन्हारे मे किछु लोक ठाढ़ रहैत अछि जे सभ आरम्भमे अदृश्य रहैत

अछि। 'ख'क लऽग एक-दोसरक बाँहि पर हाथ धयने ठाढ़ अछि एक पुरुष आ एक नारी। 'ग'क लऽग ठाढ़ अछि दू पुरुष आ दू नारी। 'घ'क नीचाँ, सीढ़ीक ऊपर, चारि गोटे (युवक) ठाढ़ अछि।]

पश्चस्वर : (नेपथ्य सँ) की सोचि रहल छह शर्व? अपन शून्यप्राय बाँझ जिनगी दऽ? मुदा एतेक दुःखी, एतेक चिन्तित होइ' जोकर भेने की छह तोहर तीस वर्षक जीवनमे? (शर्व माथ उठबैत अछि चिन्तित मुद्रामे; पश्च-स्वर प्रतिध्वनित होइछ) भेले की छह तोहर जिनगीमे? (शर्व उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि) ... भेले की छह तोहर जिनगीमे?

शर्व : (शून्य दिस देखैत) सत्ये; तेहन दुःखद घटना भेले की छैक हमर जीवनमे? साँचे पूछ, तँ किछुओ नहि। गनऽ लागी तँ सभ किछु भेटल छैक हमरा। देखियौक ने—

पश्चस्वर : रूप! (स्वर प्रतिध्वनित होइत अछि।)

शर्व : (आङुर पर गनैत रहैत अछि।)

पश्चस्वर : विद्या!

शर्व : अस्ति।

पश्चस्वर : बुद्धि!

शर्व : तीन।

पश्चस्वर : शक्ति!

शर्व : बेस।

पश्चस्वर : नौकरी!

शर्व : अवश्य।

पश्चस्वर : सुखी शिशुकाल!

शर्व : (मौन पड़ैत) अहो!

पश्चस्वर : यौवन!

शर्व : (हँसैत) हँ।

पश्चस्वर : मुदा, प्रियंवदा (प्रतिध्वनित होइत) प्रियंवदा... प्रियंवदा...

शर्व : (साश्चर्य-चकित) प्रियंवदा? (व्यथित स्वरें) प्रियंवदा नहि, हमरा आइ धरि नहि भेटल हुनक अभिज्ञान। नहि; वसंत एतेक बेर आयल आ मगनमने चलि गेल, मुदा हमर जिनगीमे कोनो प्रियंवदा नहि अयलीह। हमर पूंजीकृत विद्या, बुद्धि, रूप, यौवन, शक्ति, शैशव—किछुओ हमर आतप्त दिनमे, रातुक एसगरपनमे एक प्रियंवदाक अभाव कें दूर नहि कऽ सकल। (दीर्घश्वास त्यागि) प्रियंवदा! कतऽ छी अहाँ?

पश्चस्वर : (मंत्रोच्चारणक भंगिमामे पढ़ैत अछि शब्दसभ प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। नहुँए-नहुँए शर्व पुन: टूल-बाँक्स पर बैसि जाइत अछि पहिलुका मुद्रामे। जा धरि श्लोक पठित हैत, स्पॉट 'क' हुनके पर रहैत छनि। अततोगत्वा नहुँए-नहुँए चारू स्पॉट बढ़ैत अछि, 'ख', 'ग' आ 'घ' कनेक मद्धिम आलोक दैत। प्रकाशित भऽ उठैत छथि पूर्ववर्णित नर-नारी—छओ गोटे एवं शर्व।)

अधर: किसलयराग: कोमल-विटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुमम् इव लोभनीयम्, यौवनम् अंगेषु संनद्धम्।।

तोहर ठोर पर किसलयक रक्तिमा छौ', कोमल वृक्षशाखा सन तोहर बाँहि; अंगमे तोहर यौवन छौ' सजात कुसुमे जकाँ लोभनीय।

चलापांगं दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्।
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचर:।।
करं व्याधुन्वत्या: पिबसि रतिसर्वस्वम् अधरम्।
वयं तत्त्वान्वेषात् मधुकर! हतास्त्वं खलु कृती।।

हमर स्वप्नक मधुकर, छौ तोरे जीवन सार्थक—जे चंचल अपांग दृष्टिदें देखैत कामभएँ कँपैत स्वप्नसुन्दरी कें छूबैत छें शत बेरि, हुनक कानक लगीच अनैत छें गुप्तमंत्रणा, हुनक उठैत हाथक बाधा कें नहि मानि पीबैत छें हुनक रतिसर्वस्व अधरक रस। हाय, वृथा हमर मानव-जीवन जे नहि पाओल प्रिय कें।

[मच परक सभ क्यो मद्धिम प्रकाश सँ परिदृश्य भऽ जाइत अछि । दूर सँ गाड़ी, बस आदिक कोलाहल सूनल जाइत अछि । कोलाहल नहुँए-नहुँए तीव्र होइत विलीन भऽ जाइत अछि । अकस्मात् अनति-उच्च स्वरें सीढ़ी पर ठाढ़ चारि गोटे कोनो बात पर हँसि दैत अछि । शर्व चौंकैत माथ उठा कऽ ओहि दिस देखैत अछि । ओसभ हाथ-पयर हिलबैत अपनामे बात करैत आ हँसैत रहैत अछि, मुदा कोनो शब्द स्पष्ट सूनल नहि जाइछ । तावत नारी-कंठें 'नहि नहि, एना नहि' एवं पुरुष-कंठस्वरमे 'प्लीइज अनु'—एतबा सूनि कऽ शर्व चौंकैत स्पॉट 'ख क नीचाँ अस्पष्ट आलोकमे ठाढ़ एकजोड़ स्त्री-पुरुष दिस देखैत अछि । ओहो सभ तत्पश्चात् बात करैत रहैत अछि मुदा बिना कोनो शब्दक । अतमे स्पॉट ग' लग ठाढ़ चारि गोटे आपसमे 'चोर-पुलिस' खेलक गणना करैत देखल जाइत अछि । कने कालक लेल ओकरा सभमे सँ दू गोटेक गणना सूनल जाइत अछि—'Soldier, sailor, tinker, tailor, richman, poorman, beggarman, thie-eeeef' एक-एक बेरक गणनामे एक-एक गोटे चोर बनि रहल छल । द्वितीय बेरक गणनाक बाद ओकरा सभक अंगभंगिमे मात्र दृष्टिगोचर होइत छेक, गणना सूनल नहि जाइत अछि । कनेक कालक बाद शर्व ओहू दिस सँ मुँह घुरा कऽ सोझाँ मुँह कऽ लैत अछि ।]

प्रियंवदा : [प्रविष्ट भऽ शर्वक लऽग सँ आगाँ कहैत अछि । प्रियंवदाक प्रवेशक सङे मंग लाईटिंग जोन '२ मे मद्धिम प्रकाश पड़ैछ । स्पॉट 'क' मिझा जाइत अछि । प्रियंवदाक हाथमे दू-एकटा पोथीक सङ घयल एकटा नोट-बुक आ पेन । शर्वक लऽग सँ आगू बढ़ि गेलाक बाद सीढ़ीक लऽग ठाढ़ चारि गोटेक दिस सँ सीटीक आवाज होइत अछि । प्रियंवदा तँ सुनिते थम्हि जाइत अछि आ एम्हर-ओम्हर देखैत ओकरा नजरि शर्व पर पड़ैत छेक । ओ घूरि कऽ

शर्वक दिस अगुआ जाइत अछि। शर्व पहिलुके जकाँ माथ झुकौने बैसल रहैत अछि। शर्वा केँ नीक जकाँ निहुरैत ओकरा चारू दिस घुरैत प्रियंवदा पूछैत अछि।] अहाँ हमरा सँ किछु कहलहुँ की ?

शर्व : (चौंकैत, संकोचक स्वरमे) अ--अहाँ सँ ?

प्रियंबदा : हमरे सँ कहने हैब। (चारू दिस देखैत) एहि ठाम आन क्यो अरक्षणीया तँ देखबामे आबैत नहि अछि जनिका देखि कऽ क्यो मुँह सँ विचित्र ध्वनि बहार कऽ सकैत अछि।

शर्व : मुँह स विचित्र ध्वनि ? केहन ध्वनि ?

प्रियंवदा : वैह जे श्याम भाइजी राधा बहीन-दाइ लेल बजबैत छलाह।

शर्व : हिनका सभके तँ श्याम भाइजी आ

प्रियंवदा : नह् अहाँक सङ तँ बाते करब (तावत् दूर सँ पुन: ओ चारि गोटेमे सँ क्यो सीटी बजबैत अछि।) वैह, ओहने ध्वनि।

शर्व : (हँसि दैत अछि) हम तँ कतबो प्रयास करब तं हमरा सँ ओहन ध्वनि नहि बहार कयल हैत। नेनपने सँ तीन-चारिटा काज नहि सीखलहुँ, से एखनो तकर अफसोसे अछि : गुड्डी उड़ायब, साईकिल चढ़ब, गुल्ली-डंडा खेलब आ अहाँक भाइजी बला ई ध्वनि ··

प्रियंवदा : (आश्चर्य होइत) हमर भाइजी ?

शर्व : हँ, श्याम भाइजी !··· (दुनू हँसि दैत अछि) आ राधा बहीन दाइ (पुन: हँसऽ लगैत अछि)।

[तावत् ओहि चारू गोटे ओहि दिस सं अबैत हिनका दुनूक लऽग सँ जाइत सुना-सुना कऽ गबैत छथि 'Happy days are here again, 'Thums up, Thums up' चारू निष्क्रांत होइत अछि।]

लियऽ, अहाँ एकटा श्याम भाइजी दऽ कहैत छलहुँ, एम्हर तँ चारि-चारिटा छलाह।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा क्षमा करब, हम वृथा अहाँकेँ टोकलहुँ ।

शर्व : हमरा तँ एहि लेल धन्यवाद देबाक चाही मोसकिल तँ ई अछि जे क्यो हमरा टोकिते नहि अछि ताहि पर अहाँ सन····

प्रियंबदा : (टोकैत) प्रियंवदा हमर नाम।

शर्व : ओऽऽ! आ हमर नाम भेल शर्व।

प्रियंवदा : शर्व? तकर माने?

शर्व : शर्व माने 'शिव'। जाहि सँ 'शर्वाणी' नाम बनैत अछि।

प्रियंवदा : ओऽऽ, हँ। बंगाली सभमे ई नाम खब चलैत अछि—'शर्वाणी' नहि तँ शिवानी'।

शर्व : मुदा, एकटा बात कहू : अहाँ एतऽ की कऽ रहल छी?

प्रियंवदा : ई बात तँ हमरे अहाँ सँ पुछबाक छल।

शर्व : हम तँ सभ दिन एहि ठाम रसगरे बैसल खर्च करैत रहैत छी।

प्रियंवदा : की?

शर्व : यौवन, समय, जिनगी। आर की? आ अहाँ?

प्रियंवदा : हम तँ दिनभरिक काजक बाद क्लान्त भऽ एम्हर सँ शर्टकट करैत छी घुरबाक लेल।

शर्व : मुदा हम तँ कहियो अहाँ केँ देखलहुँ नहि।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा देखने तँ हैब, मुदा अपरिचयक कारणेँ

शर्व : सौन्दर्यक परिचयक कोन काज? देखने रहितहुँ तँ आंकल रहैत छवि मोनमे।

प्रियंवदा : (हँसैत) ई पहिल बेर सूनि रहल छी जे हम सुन्नरि छी। हमर सभटा भाइ-बहीन सत्ये सुन्नर अछि आ हम ओहि सभमे सँ ककरो बराबरी नहि कऽ सकैत छी।

शर्व : अधर: किसलयराग: कोमल-विटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुमम् इव लोभनीयम् यौवनम् अंगेषु संनद्धम्॥

प्रियंवदा : सुनैमे तँ नीक लागल मुदा संस्कृतक ज्ञान नहि अछि। तेँ अर्थ नहि बुझलहुँ।

शर्व : (मृदु हँसैत) अर्थ?—तोहर ठोर पर किसलयक रक्तिमा छौ' कोमल वृक्षशाखा सन तोहर बाँहि; अंगमे तोहर यौवन छौ' संजात

—कुसुमे सन लोभनीय।—यद्यपि कालिदास ई कहने छथि शकुंतला दऽ, तथापि ई एहि प्रियंवदो दऽ कहल जा सकैत अछि।

[प्रियंवदा लजा जाइत अछि। शर्व द्विधाग्रस्त स्वरें कहैत अछि।]

अहाँ केँ बेजाय तँ नहि लागल? हम अपन सीमा तँ पार नहि कऽ गेलहुँ?

प्रियंवदा : (आरक्तिम मुँहें) नहि-नहि, से किएक? अपन प्रशंसा सूनब ककरा नहि नीक लागैत छैक?

शर्व : आब तँ परिचय भेल? देखब! बिसरबाक क्षमते नहि रहल। (प्रियंवदा केँ निरुत्तर देखि) अच्छा, अहाँकेँ बहुत अबेर धरि रोकि रखने छी।

प्रियंवदा : नहि-नहि, से नहि। तखन, घरक लोक तँ चिंतित हैबे करत। अच्छा, तँ हम चलैत छी। भेंट तँ बादम हैबे करत। नमस्कार। (हाथ जोड़ैत अछि।)

शर्व : (हाथ जोड़ैत अछि बिनु किछु बजने। प्रियंवदाक प्रस्थानक सङे जोन १-क प्रकाश मिझा जाइत अछि। स्पॉट 'क' शर्वक शरीर पर पड़ैत अछि। शर्व पुनः बैसि जाइत अछि। पुनः ट्राम-बसक शब्द सुनबामे आबैत अछि। स्पॉट 'ग'क लऽग ठाढ़ चारि गोटे चलि जाइत अछि आ स्पॉट 'ग' मिझा जाइत अछि। दूर कतहु गिरजाक घंटा ध्वनि बजैत अछि। स्पॉट 'ख' तऽर ठाढ़ प्रेमी युगल सेहो चलि जाइत अछि। ओतहु अन्हार भऽ जाइत अछि। शर्व हाफी लैत बजैत अछि।) राति भेल। चलह शर्व सिन्हा! अपन खोंतामे घुरि चलह। आजुक जीबन, आजुक कल्लोल एतहि शेष भेलह।

[शर्व उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

द्वितीय कल्लोल

[मंच पूर्ववत्। स्पाट 'ख' क लऽग प्रेमी-युगल बैसल रहैत अछि। दू जोड़ नारी-पुरुष एहि बेर सीढ़ीक लऽग बैसल तथा क्यो ठाढ़ रहैत अछि।

ओकरा सभ पर स्पॉट 'घ' क मद्धिम प्रकाश पड़ैत छैक। शर्व अपन स्थान पर बैसल घड़ी देखि रहल अछि। दूरक गीरजामे आठ बजैत अछि। प्रियंवदा पहिबुके पोशाकमे प्रविष्ट होइत अछि। मात्र साड़ीटा दोसर पहिरने अछि।]

शर्व : कहू, आजुक नव खबरि की ?

प्रियंवदा : 'विक्स की गोली ली, खिचखिच दूर करो।' (गबैत अछि।)

शर्व : माने ?

प्रियंवदा : माने आइ जे मार्केटिंग सर्वे कयने छी, से मात्र 'विक्स वेपोरब' क लेल। एत्तेक विज्ञापन, एत्तेक प्रचार आ खर्चक लाभ कत्तेक भेल अछि हमरा सभक मार्केटिंग रिसर्च ब्यूरोकेँ सैह देखबाक कॉनट्रैक्ट भेटल। आइसँ तँ हम सभ कैक गोटे जनता जनार्बनकेँ की पसिन्न छैक, तकर पता लगावऽ लेल निकलल छलहुँ।

शर्व : तँ कतऽ-कतऽ गेल छलहुँ ?

प्रियंवदा : कतेको ठाम गेलहुँ, बेसी आबादी बला मोहल्ला सभमे।

शर्व : तँ एहू बेर कोनो सहृदय महाशय भेटल छलाह कि ·····?

प्रियंवदा : (हँसैत) एहि बेर एकटा घरमे एकटा बहुत वयोवृद्ध व्यक्ति किछु बेसिए उत्साह प्रकट कयने छलाह हमरा सभक विषयमे। बेचारेक अति-उत्साह पर पानि फेरऽ पड़ल।

शर्व : (कचकचाइत) जरद्गवः !

प्रियंवदा : तकर अर्थ ?

शर्व : ओ किछु नहि, संस्कृतमे गारि देलहुँ। अहाँ ई कहू जे ओ बुढ़वा कयलक की ?

प्रियंवदा : जाय दिअऽ ओ सभ बात ! ई कहू जे अहाँ दिन भरि की कयलहुँ ?

शर्व : प्रतीक्षा। कखन सँझुका पहर आओत आ हमर झोड़ा भरि देत आनंदक अमोल निधिसँ।

प्रियंवदा : बाप् रे ! अहाँ सङ तँ बातो करब कठिने बुझाइत अछि।

शर्व : किएक ? हमरा सन लोक नहि भेटैत अछि सर्वेमे !

प्रियंवदा : एखन धरि कोनो कविक दर्शन तँ सर्वे करैत काल नहि भेल।

शर्व : भरिसक कविलोकनि हमराटा छोड़ि कऽ— अहाँ सभके देखिते नुकायल रहैत अछि— अहाँ सभक मार्केटिंग ब्यूरो कवियो लोकनिक productक popularity-survey ने करऽ लागय एहि डरसँ।

प्रियंवदा : (हँसि दैत अछि) ओना interesting होइतैं, नहि ? (किछु मोन पड़ैत) अरे अहींसँ तँ सर्वेक सवाल सभटा पूछल जा सकैत अछि। देखैत छी ? एत्तेक दिन बीति गेल अहाँसँ प्रथम परिचयक, मुदा एखन धरि हम अहाँके अपन प्रश्नावलीक experimentक खड़हा नहि बनौलहुँ अछि। थम्हू— (कहैत बेगमे सँ एकटा नोट-बुक आ पेनसिल बहार करैत अछि। एकटा चश्मा सेहो निकालि कऽ मास्टरनी जकाँ पहिरि लैत अछि) रेडी ?

शर्व : नहि, not ready; एक मिनट। (पॉकेट सँ रूमाल निकालि कऽ अपन आँखिक ऊपर पट्टी बान्हऽ लगैत अछि।)

प्रियंवदा : अरे,-अरे, ई की कऽ रहल छी ?

शर्व : (बिना जवाब देने पट्टी बाँन्हि कऽ) हँ, आब नीक भेल— पूछू !

प्रियंवदा : मुदा आँखि पर पट्टी किएक बान्हलहुँ ?

शर्व : अहाँके कोनो कविके खड़हा बनयबाक काजमे कनेक पागलपन तँ सहबेटा पड़त। मानि लिअऽ ई तेहने किछु थिक।

प्रियंवदा : नहि-नहि, कहू ने ?

शर्व : कैकटा कारण अछि। पहिल, जनता जनार्दन आन्हरे होइत अछि। बाजारमे उपलब्ध वस्तु सभटाक गुण-अवगुण, असल-नकल किछु नहि देखैत अछि, ने देखबाक क्षमता छैक। दोसर अहाँ सभ वस्तुक दाम बढ़ौने जाउ कतबो, ओ नहि देखत ओहि दिस, आ ने प्रतिवादे करत कथुक लेल।

प्रियंवदा : आ तेसर ?

शर्व : (हँसैत) अहाँ दिस देखब तँ उन्टा-सीधा जवाब देमऽ लागब। (मृदु

हँसैत, गाढ़ स्वरमे) अहाँक दिस देखैत छी तँ सभ किछु बिसरि जाइत छी।

प्रियंवदा : (लजबैत) बहुत भेल, आब ई नाटक बन्द करू आ पट्टी खोलि लिअऽ।

शर्व : उँहुँ ! (माथ डोलबैत) आब तँ अहाँकेँ पूछैटा पड़त।

प्रियंवदा : थम्हू, तखन आर formal बनबैत छी। (बाहर जा कऽ एकटा केन चेयर मध्य भागक टूलक पाछाँ आ एकटा रीडिंग चेयर स्पॉट 'ग'क लऽग रखैत अछि—अपने 'ग'क लऽग बला चेयर पर बैसैत अछि आ शर्व केँ हाथ धरैत उठा कऽ 'क'क लऽग बला केन चेयर पर बैसबैत अछि। कंठ केँ खखारैत पूछैत अछि।) अहाँक नाम ?

शर्व : शर्व सिन्हा।

प्रियंवदा : पिताक नाम ?

शर्व : ताहि सँ कोन काज ?

प्रियंवदा : आह, जे पूछैत छी तकर जवाब दिअऽ ! बापक नाम ?

शर्व : यौगन्धरायण।

प्रियंवदा : की ? कोन नारायण ?

शर्व : कोनो नारायण नहि, योगन्धरायण।

प्रियंवदा : माँक नाम ?

शर्व : अनामा

प्रियंवदा : ई केहन नाम भेल ? अवस्था ?

शर्व : ईहो कोनो प्रश्न भेल ? लिखि लिअऽ : आयु असीम।

प्रियंवदा : अच्छा, तँ ई कहू : विवाहित कि अविवाहित ?

शर्व : विवाहित।

प्रियंवदा : पत्नीक नाम ?

शर्व : प्रियम्।

प्रियंवदा : (चौंकैत लजबैत) संतानादि ?

शर्व : अस्तित्व नहि। संभावना प्रचुर।

[प्रियंवदा लजबौत अछि ।]

अहाँ लजबौत किएक छी ?

प्रियंवदा : अहाँ कोना जानलहुँ जे हम...? तकर माने अहाँ सभटा देखि सूनि रहल छी पट्टीक अड़ सँ ?

शर्व : अहाँक मुँहक सभटा रेखा स्मृतिमे छपल अछि, रेख बढ़ल बुझबाक लेल देखबाक प्रयोजन नहि ।

प्रियंवदा : (बातकेँ टारैत) अच्छा, तँ ऐखन ई कहू जे अहाँ कोन टूथपेस्ट व्यवहार करै' छी ?

शर्व : नीमक डारि ।

प्रियंवदा : अहाँ भोरुका चायमे कोन पत्तीक प्रयोग करै' छी—डबल डायमंड, रेड लेबल, ग्रीन लेबल, ताजमहल...?

शर्व : लस्सी ! हम भोर कऽ लस्सी पीबैत छी ।

प्रियंवदा : दुपहरकऽ कोन ब्राण्डक इन्सटेन्ट कॉफी...

शर्व : दूध, दुपहरमे ।

प्रियंवदा : नह्, अहाँ हँसी कऽ रहल छी ।

शर्व : लिखि लिअऽ - बड्ड जल्दी बुझलहुँ !

प्रियंवदा : अच्छा तँ दोसरे प्रश्न करै' छी । ई कहू—अहाँ पत्नी प्रियम् सँ कत्तेक प्रेम करै' छी ?

शर्व : दू कनमा ।

प्रियंवदा : आधा किएक ? आ बाकी दू ?

शर्व : पहिलुका पत्नी सँ ।

प्रियंवदा : (उद्विग्न स्वरेँ) पहिलुका पत्नी माने ?

शर्व : सरस्वती ! कविक प्रथम प्रेम ।

प्रियंवदा : (निश्चिन्त भऽ) हूँ ! अच्छा कहू तँ प्रियमक लेल अहाँ कोन-कोन sacrifice कऽ सकैत छी ?

शर्व : भोर लस्सीक स्थान पर चाय, दुपहरकऽ दूधक स्थान पर कॉफी...! नीमक डारि फेंकि कऽ टूथपेस्ट... ।

प्रियंवदा : (प्रसन्न भऽ) तखन तँ ई अवश्य कहि सकै' छी जे प्रियमक कहला पर जे परिवर्तन हैत, तदुपरांत कोन चाय, काॅफी वा टूथपेस्टक व्यवहार करब ?

शर्व : (हँसि दैत अछि आ आँखिक बँधन खोलि कऽ) अहाँ सत्ये जबरदस्त मल्समैन छी। बात केँ कतऽ सँ कतऽ लऽ अनलहुँ। सैह घूरि-फिरि चाय, काॅफी, टूथपेस्ट आ साबुन। (दुनू हँसऽ लागैत अछि।)

प्रियंवदा : मुदा अहाँ हमर प्रश्नक उत्तर नहि देलहुँ।

शर्व : हम सैह सभ वस्तुक व्यवहार करब जे अहाँ करैत छी। हमतँ ओहि सभसँ ईर्ष्या करैत छी।

प्रियंवदा : ईर्ष्या किएक ?

शर्व : जे हम करऽ चाहै' छी, मुदा कऽ नहि पबैत छी, ओ सभ तँ सैह करैत अछि।

प्रियंवदा : से कोना ?

शर्व : (गंभीर स्वरमे) जे साबुन अहाँक शरीरकेँ छुबैत अछि, जे पेस्ट अहाँक अधर केँ चूमैत अछि, हमहूँ तकरे दिस झुकब सैह स्वाभाविक छैक। (कहि कऽ हँसऽ लगैत अछि।)

प्रियंवदा : (लजा कऽ) धत् ! अहाँ बड्ड निर्लज्ज छी।

शर्व : एहिमे निर्लज्जताक कोन बात भेल ?

प्रियंबदा : अच्छा, ई बाजू—एहि विषयमे अहाँक सिनियर मिस्टर दास की कहने छथि ?

शर्व : हमर सिनियर ? मिस्टर दास ?

प्रियंवदा : हँ, कालिदास ! (दुनू हँसि दैत अछि।)

शर्व : हँ, हुनक एकटा सुन्दर वर्णन छनि जे हमर बातक सङ मिलि जाइत अछि। दुष्यंत शकुन्तला केँ विरक्त करैत मधुकर दऽ कहने छथि :

चलापांग दृष्टि: स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णांतिकचर:।
करं व्याधुन्यत्वा पिबसि रतिसर्वस्वम् अधरम्,
वयं तत्त्वान्वेषान् मधुकर ! हतास्त्वं खलु कृती ॥

प्रियंवदा : अर्थ बुझा दिअऽ।

शर्व : हाँ, हमर स्वप्नक मधुकर, छौ तोरे जीवन सार्थक— जे चंचल अपांग दृष्टिसँ देखैत काभभयें कँपैत स्वप्नसुन्दरी केँ छूबैत छें शत बेरि, हुनक कानक लऽग-पास भनभनाइत छें गुप्तमंत्रणा, हुनक उठैत हाथक बाधाकें नहि मानि पीबैत छें हुनक रतिसर्वस्व अधरक रस। हाय, वृथा हमर मानव-जीवन (जे नहि पाओल प्रियकें।)

प्रियंवदा : हाय ! कविक केहन अधःपतन ! कतऽ भनभनाइत मधुमाछीक प्रति ईर्ष्या आ कतऽ टूथपेस्ट, साबुन चायक पत्तीक प्रति ! [दुनू हँसऽ लागैत अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

तृतीय कल्लोल

[मंच पर टूल आ टूटा कुर्सी पूर्ववत् राखल। लाइटिंग जोन १, २ आ ३ पर मद्धिम प्रकाश। स्पॉटलाइट 'ग' जरि रहल अछि। शर्व आ प्रियंवदा एकटा रीडिंग टेबुल केँ उठबैत 'सावधान', 'कने ऊँच करू', 'हँ, एम्हर', 'ओत्तऽ राखू' कहैत-कहैत प्रविष्ट होइत अछि। ओकरा दुनूक प्रवेशक सङे दुनूक ऊपर प्रकाश मद्धिमसँ तेज भऽ जाइत अछि। दुनूक सम्पूर्ण मंच पार भऽ कऽ स्पॉटलाइट 'ग'क लऽग राखल चेयरक एगो टेबुल धरैत अछि। शर्व दू-एक बेर टेबुल-चेयर पर बैसि कऽ सतोष बोध करैत अछि। प्रियंवदा कनेक कुर्सी पर जा कऽ बैसैत अछि।]

प्रियंवदा : टेबुल तँ आबि गेल, आब ?

शर्व : आब की ? ताहि पर बैसि कऽ सभ दिन भरि राति अहाँ केँ पत्र लिखब।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा ? एतेक दिन लिखलहुँ से लिखलहुँ। मुदा आब तँ···विवाहक बादो ?

शर्व : एहन बहुतरास बात मोनमे उमरि अबैत छैक जकर प्रकाश वाणी सँ नहि कयल जा सकैछ, लिपिमे चाही तँ निबद्ध कऽ सकैत छी। सैह सभ बात जे अहाँकें कहि नहि सकब, कवितामे गाँथि लेब।

प्रियंवदा : (हँसैत) गँथबाक लेल टेबुलक कोन प्रयोजन ?

शर्व : (मृदु हँसैत) विवाहक पश्चात् तँ जतऽ-जतऽ जा कऽ बैसब नहि, बैसि नहि सकब । तखन टेबुलेक दुनू दिस हाथमे हाथ धयने बैसल हम दुनू······

प्रियंवदा : (हँसि कऽ) हाथमे हाथ धऽ बैसबाक लेल टेबुलक कोन प्रयोजन ? ओ तँ जेना पार्कमे बैसैत छलहुँ तहिना घरक सीढ़ी पर वा माटिएँ पर देवालमे ओठङि कऽ बैसि सकैत छी ।

शर्व : हम तँ पहिने कहलहुँ, नेनपन सँ हमरा तीनटा वस्तुक लेल बड्ड आकांक्षा छल । एक, रीडिंग टेबुल : शैशवक स्मृति सँ जड़ित । बाबूजी सभखन राति कऽ टेबुल-चेयर पर बैसि कऽ लिखैत रहथि बहुत किछु । ओ कहियो सार्थक कथाकार नहि बनि सकलाह प्रयासक अछैतो, मुदा हमरा एखने ओ प्रयास, ओहि अथक परिश्रम दऽ मोन अछि । राति कऽ निन्न कखनो मुहूर्त्तक लेल टूटैत छल तँ हुनका ओत्तहि देखैत छलहुँ । दिन भरिमे तँ हुनका देखिते नहि छलहुँ । छोट-छोट भाइ-बहीनक शिक्षा, विवाह आ पालनेक लेल खटैत-खटैत हुनक दिन बीति जाइत छलनि, हमरा लेल वा हमर निर्वाहिक मायक लेल ओ समये नहि दऽ पबैत छलाह । आ राति कऽ साहित्य-सर्जनक भूत सवार होइत छल हुनका पर ।

प्रियंवदा : दोसर ?

शर्व : आर एकटा भेल स्टैंडिंग लैम्प : हमरा सभक बिछौनाक लऽग राखल रहैत छल । आ हमर बाबूजीक कथाक पहिल पाठिका अत्यंत आग्रहक सङ तकर आलोकमे अक्षर सभ परसँ सोत्साह दड़-बड़ मारैत छलीह, हमर माय । हुनका दृढ़ विश्वास छलनि जे हुनक पतिकेँ एक दिन एकटा महान साहित्यकारक रूपमे स्वीकृति भेटतनि । कखनो जखन हमरा निन्न टूटि जाइत अछि, हम ओहन स्टैंडिंग लैम्प तकैत छी ।

प्रियंवदा : आ तेसर ?

शर्व : एकटा बड़का हाथबला ईजि चेयर : हमर दादाजी ताहि पर दिन भरि बैसल रहैत छलाह। हुनका चलै-फिरै'मे मोसकिल होइत छलनि। विश्वक लेल उत्सर्ग कयने छलथिन एकटा पयर, यौवनेमे। तेँ!

प्रियंवदा : विश्वक लेल?

शर्व : (हँसैत) हँ, माने द्वितीय विश्वयुद्धक लेल ई हाल भेल छलनि। (थम्हैत) ओ हमरा अपन ईजि चेयरक हाथ पर बैसा कऽ दैत्य-दानव, राजकन्या-राजकुमार, राक्षस आ यक्ष, आकाशक देवता आ पातालक नागराज— ओहि सभक कथा सुनबैत छलाह। आ हम त्रिभोर भऽ दादाजीक मुँह सँ ओहि आश्चर्य दुनियाक खिस्सा सुनैत छलियनि।

[किछुकाल दुनू चुप रहैत अछि।]

हम पितामही केँ कहियो नहि देखलियनि, मुदा ओ एहि अभाव केँ बूझऽ नहि देलथिन। (चुप रहैत अछि।) कतऽ गेल ओ दिन आ कतऽ हेरा गेल ओ सभ राति? पता नहि।

प्रियंवदा : ओ सभ दिन वा राति जँ नहि बीति जैतैक तँ हमरा अहाँ कोना भेंटितहुँ? ओ सुखक समय ओ सभ आनंदक दिन-राति बीति गेल ठीके, मुदा स्मृति सँ तँ अलोपित नहि भेल!

शर्व : ठीके कहलहुँ! शैशव जँ स्मृतिमे बदलि नहि जाइत तँ प्रियवदा कोना हमर शर्वाणी बनितथि?

[प्रियंवदा प्रश्नयक हँसी हँसैत अछि। शर्व उठि कऽ प्रियंवदाक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। प्रियवदा सेहो ठाढ़ भऽ कऽ हाथ बढ़ा दैत अछि। दुनू पर स्पॉट-लाईट 'क' पड़ैत छैक। एक-एक कऽ कऽ जोनल लाईट आ स्पॉट 'ग' मिझा जाइत अछि। दूर सँ विवाहक मंत्रोच्चारण तथा संस्कार-गीतक स्वर गूँजि रहल अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

चतुर्थ कल्लोल

[मंच अन्हारमे डूबल, मात्र स्पॉट 'ख क लऽग ठाढ़ एकटा स्टैंडिंग लैम्प जरि रहल अछि। शर्व आ प्रियंवदा तकर नीचाँ माटि पर एक-दोसराक दिस पाछाँ घुरने बैसल किछु पढ़ि रहल अछि। स्टैंडिंग लैम्पक प्रकाशमे अस्पष्ट रूप सँ रीडिंग टेबुल आ चेयर, टूल आ केन चेयर एवं पाछाँक प्लैटफार्म पर एकटा फोल्डिंग खाट दृष्टिगत होइत अछि। शर्व कुर्ता-पयजामा एवं प्रियंवदा गृहवधू जकाँ पहिरने-ओढ़ने अछि।]

शर्व : देखू तँ प्रियम् ई केहन लागैत अछि सूनै' मे ?—

प्रियंवदा : एक मिनट। एखन एकटा बहुत interesting कविता पढ़ि रहल छी। कनेक बादमे सुनब, प्लीज !

शर्व : कोन कविता एत्ते' interesting लागल ? कने हमहूँ तँ सूनी !

प्रियंवदा : कनिएटा सुना रहल छी—ओना तँ अहाँ पढ़ने हैब।

ऋतुमती, प्रत्येक रातिकऽ
फुलगर भऽ उठू ओछाओन पर
गर्भ मढ़ल अछि कविता सँ
प्रखर पहरा,
मलिछाह मलीदा ओढ़ि
कखन आबि जाथि महाराज,
आजीवन प्रतीक्षा तनिक।"

सुन्दर अछि। ने ?

शर्व : हँ, मुदा हम जे कविता एखने लिखलहुँ, तकर तुलनामे ई कैक पंक्ति तत्तोक नीक नहि लागल।

प्रियंवदा : तँ पढ़ू अहाँक कविता—शीर्षक की देलहुँ ?

शर्व : 'दमयन्तीक उपदेश'। सुनू—

"तीरक लऽग-पास पथरायल पड़ल रहैत अछि लोक—
निरंग अशक्त लोक ! घास-पात धैने रहैत अछि तकरा,
सेमारमे लपटल तक्षक बसातमे डोलि रहल अछि,
झोंझमे झोंकाह आगि सुनगि रहल अछि,

दमयन्ती, दमयन्ती—सुनसान जंगल सिहरि उठैत अछि,
फूलपातक मध्य दऽ टूअर सुरुज टुघड़ैत अछि
अत्यन्त सावधान भऽ—आलोक चीरैत अछि हिरण्यक पेट।
गाछ सभ उपदेश दैत अछि—
एम्हर जाउ, ओम्हर घुरु, ओहि दिस देखू—
दमयन्ती, दमयन्ती, जंगल जुनि पार होउ ?
अन्हार मे ईशानं दिस देहक दलाल अछि प्रतीक्षा करैत
दमयन्ती, समय जुनि पारहोउ
नैऋत कोन मे नुकामल छथि नलदेव।
दमयन्ती, मनुक्खक विश्वास जुनि करू
ओ तँ अहाँ केँ लेत बान्हि कथा, कविता आर अकबाह सँ,
अहाँ जंगल जुनि पार होउ,
नहि तँ सभटा गाछ अहाँक शोकेँ आत्महत्या करत।"

[चुप्प रहि कऽ]

कहू, केहन लागल ?

प्रियंवदा : (अभिभूत भऽ) सुन्दर।

शर्व : मात्र 'सुन्दर' ?

प्रियंवदा : नहि, बहुत सुन्दर। मुदा आइ धरि एहि एक वर्षक बिवाहित जीवनमे अहाँक कविता मे विषादे पाओल। से किएक ?

[शर्व निरूत्तर रहैत अछि।]

नल जे कि अपनोसँ बेसी दमयन्ती सँ प्रेम करैत छल अकस्मात् दमयन्ती केँ मात्र वृक्ष समक भरोसे सुनसान भयानक जंगलमे छोड़ि दैत अछि। जंगलक गाछ-बिरीछ दमयन्ती केँ मनुष्य केँ अविश्वास करब सिखबैत अछि। भयानक जंगल सँ बाट ताकि निकालि कऽ दमयन्ती बाहर चलियो जाय तँ ओतऽ देहक दलाल प्रतीक्षा करैत अछि। एना किएक ?

शर्व : जीवनके हम जेहन पौलहुँ, जेहन देखलहुँ—तहिना कविता मे लिखैत छी।

प्रियंवदा : एहन कोन विषाद अहाँक जिनगीकें विषाक्त कयने अछि जे कविता मे यौवन, उच्छ्वास, आनंद, आलोक आर जीवन रहिते नहि अछि। मात्र जरा निरानंद, अविश्वासक, अंधकार आ मृत्यु भये किएक? शर्वं कें (निरुत्तर देखि) बाजू ने? एहन की देखलहुँ जीवन मे? (शर्व तैयो चुप रहैत अछि से देखि कऽ) बाबूजी, माँ वा दादाजी तँ अहाँक नेनपने मे स्वर्गवासी भऽ गेल छलाह। ताहि लेल जे कष्ट करऽ पड़ल तकर दुःख,तकर अपमान तँ हम बुझैत छी। मुदा ताहि लेल गंभीर विषादेक कविता लिखबा मे हमरा विश्वास नहि होइत अछि।

शर्व : जे किछु हम देखलहुँ--सहलहुँ आ कयलहुँ, से अहाँ सोचि नहि सकैत छी।

प्रियंवदा : सैह तँ हम जानऽ चाहैत छी—(प्रश्नाकुल-दृष्टिएँ देखैत)

शर्व : कहलहुँ तँ? (धीरे)

प्रियंवदा : कहाँ किछु कहलहुँ ?

शर्व : (ठाढ़ होइत) बस्,ओतबे कहि सकैत छी।

[मंच अकस्मात् सम्पूर्ण आलोकित भऽ उठैत अछि।]

प्रियंवदा : (उठि कऽ) से किएक !

शर्व : प्लीज प्रियम्, हमरा आर किछु नहि पूछू? (शर्वक मुख पर अस्वाभाविकताक छाप दृष्ट होइछ।) प्लीज ! (प्रियंवदाक प्रश्न आ असंतोष कें बुझैत) एहन किछु बात होइत छैक जाहि दऽ पूछल नहि जाइत छैक। नहिएँ पूछल जाय तँ मंगल।

प्रियंवदा : (रीडिंग टेबुल लग जा कऽ टेबुल पर झुकि कऽ ठाढ़ होइत अछि चिंतित मुहें स्वगतोक्ति जकाँ) मोनक एहन कोनो दरबज्जा अछि जाहि परक ताला समक लेल नहि खुजैत छक। (शर्व कें निरुत्तर देखि) मुदा हमरो लेल नहि ? (शर्व तैयो चुप रहैत अछि।)शर्व !

शर्व : (व्यथित स्वरें, दर्शकक दिस देखैत प्रियंवदाक दिससँ मुँह घुरा कऽ) हँ प्रियम्। (प्रियंवदाक टक लग अनुआ)

प्रियंवदा : हमरा आ अहाँक बीचमे ई कोन देबाल अछि, शर्व ! हम दुनू मिलि कऽ एकरा ढाहि नहि सकैत छी ?

शर्व : (दुनू आँखि केँ झाँपैत) नहि प्रियम् ।

[प्रियंवदा अवाक् विस्मय भरल आँखिएँ देखैत रहि जाइत अछि। नहुएँ-नहुएँ एक-एक कऽ कऽ मंचक जोनल लाईट मिझा जाइत अछि। मात्र स्पॉट 'ख' शर्व पर आ स्पॉट 'क' प्रियंवदा पर पड़ैत छैक।]

प्रियंवदा : शर्व !

[शर्व निःशब्द भऽ कानैत अछि दुनू हाथेँ मुँह झाँपने। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]

पंचम कल्लोल

[मंच पूर्ववत्। शर्व शर्ट-पैंट पहिरने आ प्रियंवदा बाहरक पोशाकमे, केश खुजल। शर्व केँ विकृत आ क्लान्त देखा रहल अछि। शर्व सीढ़ी पर बैसल अछि। ओकरा पर स्पॉट 'ख' पड़ैत छैक। प्रियवदा प्रविष्ट होइत अछि। सङे जोन १ प्रकाशित भऽ उठैत अछि। शर्व आ प्रियंवदाक मध्य अन्हार रहैत अछि।]

प्रियंवदा : शर्व ! (चुप्प देखि) प्लीज ! हमरा क्षमा कऽ दियऽ ! काल्हि राति हमर भैया आ' भौजीक सोझाँ अहाँ केँ हम...... (थम्हैत) विश्वास करू, हम जानि-बुझि कऽ किछु नहि कयलहुँ ! (शर्वक मुहैठमे कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छैक।) आ ताहि लेल अहाँ आइ दिन भरि ने खयलहुँ, ने पीलहुँ, ने ऑफिस गेलहुँ ! (शर्वक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। लाईटिंग जोन २ सेहो आलोकित भऽ उठैछ। शर्वक लग आ कऽ) एत्तेक दूर धरि जे अहाँ हमरा सँ बाजबो नहि कयलहुँ। (झुकि कऽ शर्वक हाथ धरैत अछि, मुदा शर्व हाथ बढ़यबाक, धरबाक वा छोड़ि देबाक कोनो प्रयास नहि करैत अछि।) नित्तहु

भोर कऽ निन्न सँ उठबाक बाद अहाँ हमरा दिस देखि कऽ मृदु हँसै' छी। आइ ताहू सँ हम वंचित रहि गेलहुँ। किएक? कहू ने! (शर्वा तैयो चुप रहैत अछि।) कालिह राति जे पहिरना पहिरने छलहुँ, सैह पहिरि कऽ सूति गेलहुँ आ आइ दिन भरि सैह पहिरने छी! हमरा पर तमसा कऽ अपने पर किएक अत्याचार कऽ रहल छी? (शर्वा तैयो किछु नहि बजैत अछि। प्रियंवदा दोसर हाथ सँ शर्वाक मुँह अपना दिस घुरबैत अछि। शर्व शून्य-दृष्टिएँ देखैत अछि) कहू, की कयने अहाँक तामस ठंढा हैत? कोना हम अपन अपराधक प्रायश्चित कऽ सकैत छी? (शर्व निरुत्तर रहैत अछि) कहलहुँ तँ अन्याय कयने छी हम। (शर्वा केँ छोड़ि मंचक सम्मुख-भागमे आबैत अछि। शर्व ओहिना एक्के दिस देखैत बैसल रहैत अछि। पुनः शर्व पर स्पॉट 'घ' आ प्रियंवदा पर स्पॉट 'ख' पड़ैत अछि) हमरा की भऽ गेल छल से हम नहि कहि सकैत छी। जखने पता चलल जे हमरा सँ पहिनो आर एक गोटे अहाँक जिनगीमे आयल छलीह, तखन अपना केँ सम्हारि नहि पौलहुँ। कन्नारोहट कऽ कऽ एकटा scene ए create कैलहुँ। पता नहि भैया आ भौजीओ हमरा दऽ की सोचलथिन? पहिल तँ ई जे हमरा दुनूक विवाहित जीवनमे कोनो सुख-शान्ति नहि अछि। हमहीं जानै' छी ई कत्तेक फूसि धारणा अछि! मुदा ओ सभ तँ हमरा दुनूक जीवनक प्रत्येक मुहूर्त केँ देखैत नहि छथि। तेँ हुनका सभ केँ कोना खबरि रहतनि केहन सुखस्मृति सँ भरल अछि हमरा सभक जीवन? दोसर बात ओ सभ ई अवश्य सोचने हैताह जे हम अहाँ सँ प्रेम-विवाह कयलहुँ, जाहि लेल ओ सभ कहियो मना नहि कयलनि। मुदा प्रेम-पर्व चलल एत्तेक दिन धरि आ तैयो हमरा ई नहि पता लागल जे अहाँक विवाह पहिने भऽ गेल छल आ' ओहि विवाह सँ संतानादि सेहो भेल छल? ई हुनका सभ लेखें आश्चर्य-जनक लागल हेतनि। यैह सभ बात हमरा पागल बना देने छल।

आ' तें हम —(कहैत शर्वक दिस घुरैत अछि। ओ तैयो बिनु प्रतिक्रियाक बैसल रहैत अछि भोथ दृष्टिएँ प्रियंवदा दिस देखैत। प्रियंवदा चुप्प भऽ टेबुल-चेयरक लग जाइत अछि; सङे-सङ स्पॉट 'ग' जरि उठैत अछि। ओतऽ सँ स्टैंडिग लैम्पक लग जाकऽ स्वीच दबा कऽ लैम्प कें ऑफ-ऑन करैत रहैत अछि, कैक बेर तीन-चारि बेर जरा-मिझा कऽ मिझायल छोड़ि दैत अछि। सङे-सङ स्पॉट 'ख' जरि उठैत अछि स्टैंडिग लैम्पक ऊपर। तत्पश्चत् पाछाँ प्लैटफार्म पर चढ़ि कऽ फोल्डिग खाट पर बैसैत अछि। जेनल लाईट 'इ' जरि उठैत अछि मद्धिम प्रकाश दैत। एकटा रोटेटिंग डिस्क लैम्प सँ सम्पूर्ण मंच पर सँ आलोक आ अन्हारक देब बहि जाइत अछि। नेपथ्य सँ pre-recorded चारिटा स्वर सुनना जाइछ—शर्व, प्रियंवदा, भैया आ भौजीक—)।

शर्व : अहाँ कें हम अपन जिनगीक सभटा पन्ना किएक पढ़ऽ देब ? (प्रतिध्वनिमे 'किएक ?' 'किएक' ? 'किएक' ?) एहन बहुत घाव रहैत अछि मनुक्खक जीवनमे जे दोसर ज़ीवनमे तकरा नहि लाबी तँ मंगले…

भौजी : तोरो किएक जिद्द चढ़ल छौ' प्रियम् ? सभक सभटा बात जानैटा पड़तौक ?

प्रियंवदा : (क्रुद्ध स्वरें) सभक सभटा बात ? 'सभ' के ? हम तँ सभकें ई प्रश्न करैत नहि जा रहल छी ? हम तँ अपन प्रेमी, अपन पति सँ ई प्रश्न पूछि रहल छी। तोंही एत्तेक जिद्द किएक' करैत छह ?

भैया : (बुझैबाक प्रयास करैत) मुदा प्रियम्, एत्तेक दिन भऽ गेलाक बादो जखन शर्व तोरा किछु नहि कहलथुन तकर अर्थ ई जे ओ नहि कहऽ चाहैत छथि।

शर्व : (बातक सङे सङ चलैत प्लेट, छूरी, चम्मच पटकैक शब्द, कुर्सी घिसिआबैक शब्द सेहो—जेना शर्व तमसा कऽ भोजन पर सँ उठि रहल अछि) हँ-हँ, हम नहि कहऽ चाहैत छी ? की कऽ लेब अहाँ सभ ? हकरा फाँसी पर चढ़ा देब ? तँ दियऽ !

प्रियंवदा : (चीत्कार करैत) थम्हू ! अहाँ के लाज नहि होइत अछि--घरमे बजा कऽ भैया-भौजीक अपमान कऽ रहल छी ?

शर्व : (ततोधिक उत्तेजित भऽ) अहाँ चुप रहू ! हम सभटा बुझैत छी, अहाँ लोकनि मिलि कऽ हमरा विरुद्ध षड्यंत्र कऽ रहल छी। हमर अतीत केँ कब्र सँ खोधि कऽ बहार करबाक चेष्टा कऽ रहल छी। एँ ····? (हँसैत) हमरा की बुड़िबक बुझै' छी।

भैया : मुदा शर्व, हमरा सभकेँ अहाँ गलत बुझि रहल छी।

शर्व : आब हम सभकेँ चीन्हि गेलहुँ, ककरो विश्वास नहि !

प्रियंवदा : हे ईश्वर ! अहाँकेँ हमरा पर विश्वासो आब नहि रहल ?

शर्व : विश्वास ? उँ ? (जोर जोर सँ अस्वाभाविक स्वरें हँसैत) किएक करू विश्वास अहाँक ? आब हम ककरो विश्वास नहि करै' छी (प्रतिध्वनित होइत अछि 'ककरो नहि', 'ककरो नहि')।

प्रियंवदा : जहन्नुममे जाउ अहाँ आ धहाँक अतीत ! जखन विश्वासे नहि रहल तँ रहल की ? हमरा अहाँ सँ कोनो सम्बन्ध नहि ··।

शर्व : (अट्टहास करैत) कोनो सम्बन्धे नहि रहल ? ऐँ ? (हंसैत) अहाँ तँ देखैत छी दक्षा सँ आर ऊँच दर्जाक शैतान छी।··· विश्वास··· सम्बन्ध ··सभ समाप्त ?

प्रियंवदा : के दक्षा ? के लागैत अछि ? ओ अहाँक ?

शर्व : (अट्टहास) 'के लागैत अछि ?' नहि 'के लागैत छल ?' कहू ! ओ अहीं सन 'प्रियम् वदेत्' छल, मुदा दू-दूटा संतानक जन्म देलाक बादो छल कामताड़ित शिकारी कुकूर जकाँ; कतेकोक जिनगी नष्ट कयलक ···ने राखलक विश्वास, आ ने सम्बन्ध ! तेँ एक दिन हम ओकर हाथ-पयर बान्हि कऽ ओकर कंठ दबा कऽ ·· ··

प्रियंवदा : (डरें चीत्कार करैत, स्पष्ट प्रतीत हैत जे शर्व हुनक कंठ दबा रहल छल) आः, आ-आ, क्-की कऽ रहल छी ? छ् छोड़्···(शर्व पागल जकाँ हँसैत रहैत अछि। भैया आ भौजीओ चीत्कार करैत छथि प्रियंवदा केँ छोड़ैबाक लेल।)

शर्व : (हुनका सभक चीत्कारक सङ सङ पागल जकाँ चीत्कार करैत हँसैत अछि) एहि बेर हम नहि छोड़ब ! खतमे कऽ देब अविश्वासक जड़ि कें·· खतमे कऽ देब···(हँसैत-हँसैत कानऽ लगैत अछि) ई-ई की कऽ रहल छी हम ? ई हम···(पागल जकाँ भोकासी पाड़ि कऽ कानऽ लगैत अछि ।)

[आलोकक देब बंद भऽ जाइत अछि । मंच पर प्रकाश पूर्ववत् । शर्व सीढ़ी पर आ प्रियंवदा पहिलुके जकाँ खाट पर बैसल रहैत अछि]

प्रियंवदा : शर्व ? अपन प्रियमक दिस नहि देखब ? कल्हुका ओहि एक मुहूर्त्तक झगड़ा आ विच्युतिए असल भेल, आ हमरा दुनूक एत्तेक दिनक प्रेम किछु नहि ?

[शर्व चुप रहैत अछि । प्रियंनदा शर्वक लग जा कऽ सीढ़ी पर बैसैत अछि । कोमल स्वरें शर्वक नाम चिकरि शर्वक हाथ अपन हाथमे लैत अछि । अत्यन्त ममत्वक दृष्टिएँ शर्वक दिस देखैत अछि एवं ओकर केश पर हाथ फेरैत रहैत अछि । ओकरा दुनू पर स्पॉट 'घ' तीव्र रूपें पड़ैत छैक । बाँकी सम्पूर्ण मंचमे अन्हार । कनेक कालमे मंच पर अस्पष्ट प्रकाशमे दू-तीन गोटे आबैत अछि एवं एक-एक कऽ स्टैंडिंग लैम्प, केन चेयर, रीडिंग चेयर, रीडिंग टेबुल, आ फोल्डिंग कॉट लऽ जाइत अछि । प्रकाश मात्र टूल पर आ सीढ़ी पर बैसल शर्व आ प्रियंवदा पर पड़ैत अछि । प्रियंवदा क्रन्दनक स्वरमे पुछैत अछि]

शर्व, हमर शर्व ? आब की कहियो अहाँ अपन प्रियम् सँ बात नहि करब ? नलदेवे जकाँ अपन दमयन्ती कें छोड़ि देब एसगरे पथक खोंज करब ? आब कहियो कि कविता नहि सुनायब अपन ? (शर्व कें निस्तेज निश्चुप देखि) हमरा नहि विश्वास होइत अछि अहाँ दऽ ओसभ जे किछु कहलनि । अहाँ कोना दक्षाक हत्या कऽ सकैत छी ? ई कोना भऽ सकैछ जे अहाँ अपन प्रेम-प्रीति-ममता सँ जे दुनू संतानक जन्म देने छलिऐक ? ओहि दुनू कें निर्मम रूपें एहि दुनिया सँ हटा

देलिऐक ? नहि-नहि, अहाँ एत्तेक निष्ठुर नहि भऽ सकै छी। ओसभ जे खुशी कहथु, हम नहि मानैत छी।

[एतबामे एकटा ऐम्बुलेन्सक साईरेन ध्वनि सुननामे अबैत अछि -- दूर सँ बल आबि जाइत अछि। प्रियंवदाक मुँह पर शंका आ आतंकक चेन्ह स्पष्ट प्रतीत होइत अछि। ओ बुझैत अछि जे मानसिक अस्पताल सँ शर्वा केँ लेबाक लेल ऐम्बुलेन्स आयल अछि। मुदा वास्तवमे से मानबाक लेल तैयार नहि छल। दू गोट डाक्टर हाउस-कोट पहिरने मंच पर प्रविष्ट होइत अछि। मुदा ताहि सँ पहिने गाड़ी दरबज्जा खोलबाक आ बन्द हेबाक शब्द एवं दू व्यक्ति चलि कऽ अयबाक पदध्वनि पश्चध्वनिक रूपमे सुनबामे आवैत अछि। प्रत्येक शब्दमे प्रियंवदाक आतंक बढ़ैत रहैत अछि। शर्वा केँ मान-सिक अस्पतालक डाक्टर लग जयबाक प्रयास करैत अछि। ई देखि कऽ प्रियंवदा अपना केँ सम्हारि नहि पबैत अछि आ चीकरि उठैत अछि।]

न-अ-अ-अ-हि! कतऽ लऽ जा रहल छी अहाँ लोकनि शर्वा केँ? नहि, नहि —ओ पागल नहि छथि। ई फूसि अछि जे ओ कहियो पागल रहथि। ई सरासर झूठ बात केँ ओ ककरो हत्या कयने छथि। नहि, नहि, हमर शर्वा एहन नहि भऽ सकै छथि। नहि, छोड़ि दियऽ अहाँ लोकनि हुनका!

[ओ सभ किछु नहि कहैत अछि। प्रियंवदा सँ शर्वा केँ छोड़ा कऽ दुनू दिस सँ उठा कऽ चलऽ लागैत अछि। प्रियंवदा कानैत बाधा दैत आगाँ बढ़ैत अछि दू डेग आ थम्हि जाइत अछि। नेपथ्य सँ कविता-पाठक स्वर भासल अबैत अछि।

"तीरक लऽग-पास ..दमयन्ती, दमयन्ती जंगल जुनि पार होउ!"

[अन्तिम पंक्ति प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। प्रियंवदा शून्य दृष्टिएँ देखैत रहैत अछि। मंच अन्हार भऽ जाइत अछि।]